पावन जीवन चरित्र

श्रीश्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी
महाराज जी का जीवन चरित्र

SGD

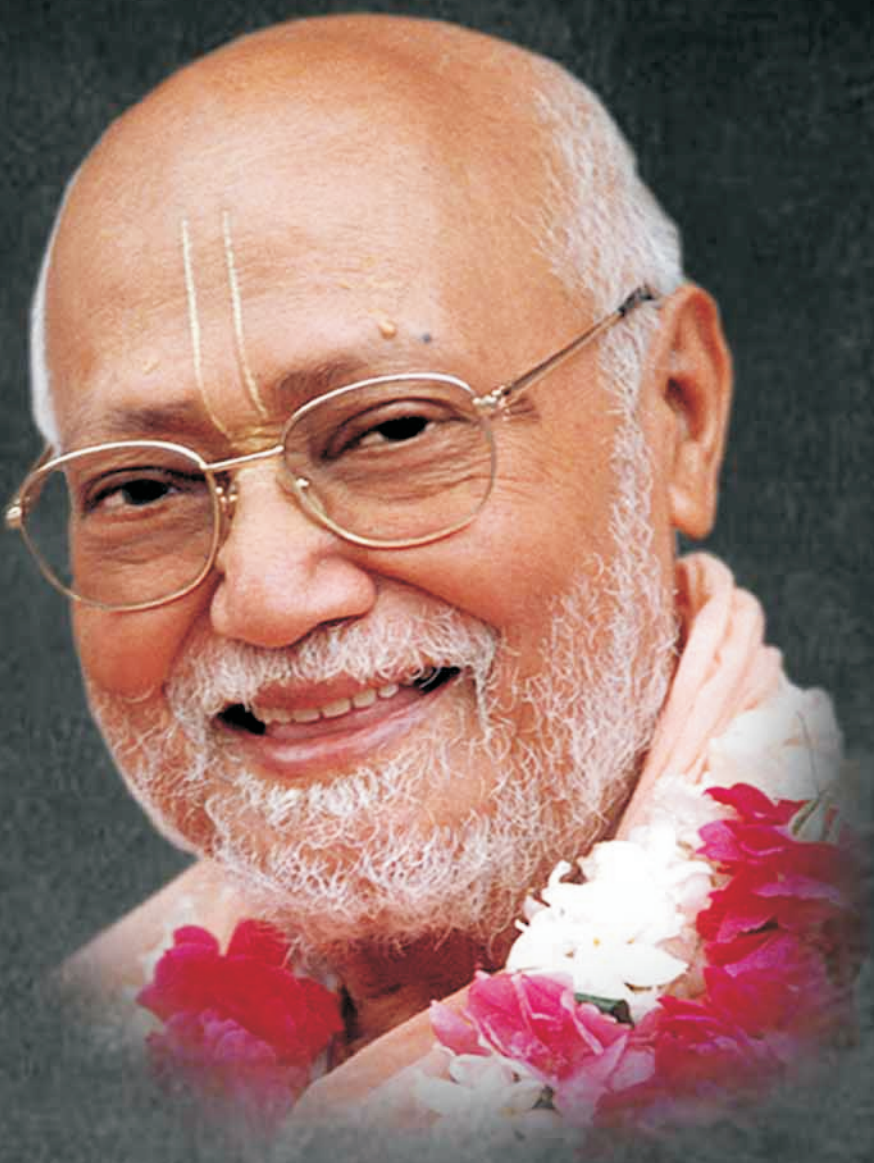

निखिल भारत श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ
प्रतिष्ठान के प्रतिष्ठाता,
नित्यलीला प्रविष्ट ॐ 108
श्री श्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी
महाराज विष्णुपाद जी के
प्रियतम शिष्य, त्रिदण्डिस्वामी
श्रीमद् भक्तिबल्लभ तीर्थ गोस्वामी महाराज
जी द्वारा सम्पादित

SGD

प्रथम खंड

भाग - 14

श्रीलप्रभुपाद जी का अन्तिम उपदेश

श्रीलगुरुदेव

SGD

श्रीश्रीगुरु गौरांगौ जयतः

23 दिसम्बर 1936 को पुरुषोत्तम धाम से बाग बाज़ार स्थित श्रीगौड़ीय मठ में लौटने से पूर्व व नित्यलीला में प्रवेश करने से पहले श्रील प्रभुपाद जी ने वहाँ पर उपस्थित भक्तों को प्रातः काल के समय अन्तिम उपदेश दिया जिसमें उन्होंने अपने आश्रित शिष्यों को निर्देश

दिया-सभी श्रीरूप-रघुनाथ की कथाओं का परमोत्साह के साथ प्रचार करें। श्रीरूपानुग-गणों के पादपद्म की धूलि बनना ही हमारी चरम आकांक्षा का विषय है। आप सभी अद्वय-तत्त्व की अप्राकृत इन्द्रियों की तृप्ति करने के उद्देश्य से, आश्रय-विग्रह {सद्गुरु} के आनुगत्य में आपस में मिल-जुल कर रहना आप सभी एक ही उद्देश्य से एक साथ मिल कर मूल आश्रय

विग्रह {राधा जी} की सेवा करें।

जगद्गुरु श्रील प्रभुपाद जी ने अपने आश्रित शिष्यों को आश्रय विग्रह {गुरुपादपद्म} के आनुगत्य में रहते हुये, एक ही उद्देश्य से एक साथ रहकर रूप-रघुनाथ जी की वाणी का प्रचार करने का उत्साह प्रदान किया था। श्रील प्रभुपाद जी के अप्रकट होने के बाद जो लीला प्रदर्शित हुई, उसे देखकर अनर्थयुक्त, अदूर-दृष्टि

सम्पन्न व्यक्तियों में ये भावना आ सकती है कि इन घटनाओं से श्रील प्रभुपाद जी की आज्ञाओं का उल्लंघन हुआ है। परन्तु, मंगलमय श्रीहरि की इच्छा से जो होता है, मंगल के लिए होता है, पारमार्थिक जीवन का यह मूल विषय ध्यान में न रहने के कारण हम दुःखी होते हैं। श्रीभगवान् की इच्छा न होने से कुछ भी नहीं हो सकता। दूसरी ओर चूँकि भगवान् मंगलमय हैं, अतः

उनकी इच्छा से जो भी होता है, उसमें मंगल अवश्य ही निहित होता है। किसी भी विराट उद्देश्य की पूर्ति के लिए भगवान् की इच्छा से एक के बाद एक जो घटनाएँ होती हैं, बहुत से अदूर दृष्टि वाले व्यक्ति उन्हें समझ नहीं पाते हैं।

"पृथ्वीते आछे यत
नगरादिग्राम।
सर्वत्र प्रचार हइवे मोर
नाम।"

श्रीमन् महाप्रभु जी की उपरोक्त वाणी की सत्यता को दिखाने के लिए श्रीमन् महाप्रभु व उनकी अभिन्न प्रकाशमूर्ति श्रील प्रभुपाद की इच्छा से ही ऐसा हुआ अर्थात् श्रील प्रभुपाद जी ने सारी पृथ्वी में महाप्रभु जी की वाणी का प्रचार कराने के लिए अपनी कृपा-शक्ति संचारित की तथा दिग्विजयी शिष्यों को अलग-2 रहकर प्रचार करने की प्रेरणा प्रदान की। श्रील प्रभुपाद जी ने जगत्

का मंगल करने के उद्देश्य से ही ऐसा किया। वे आचार्य-शक्ति-सम्पन्न अपने शिष्यों को एक ही स्थान में आबद्ध रख कर उनकी योग्यता को एवं प्रचार की व्यापकता को संकुचित नहीं करना चाहते थे। आज श्रील प्रभुपाद जी के आश्रित शिष्यों की अलौकिक शक्ति के प्रभाव से सारी पृथ्वी पर श्रीमन् महाप्रभु जी की वाणी प्रचारित, समादृत व गृहीत होने के कारण श्रीमन्

महाप्रभु जी की भविष्यवाणी सार्थक हो रही है।

यदि वे {प्रभुपाद जी के कृपा-शक्ति-संचारित शिष्य} गुरु-आनुगत्य रहित अनर्थयुक्त जीव होते तो उनके द्वारा इस प्रकार का व्यापक प्रचार सम्भव नहीं था। भगवान् के उद्देश्य के बारे में न जानने वाले दुर्भागे व्यक्ति ही एक की वन्दना व एक की निन्दा करके परमार्थ पथ से गिर जाते हैं व अपराध रूपी

दलदल में फंस जाते हैं। श्रील प्रभुपाद जी के सभी पार्षदों ने अपनी-2 योग्यता के अनुसार श्रील प्रभुपाद जी की आज्ञा पालन करने के लिए निष्कपट यत्न किया व कर रहे हैं। उनके निष्कपट प्रचार के फल स्वरूप ही आज बहुत से सौभाग्यशाली बद्ध जीवों ने श्रीमन् महाप्रभु जी की शिक्षा के प्रति आकृष्ट होकर भक्ति-सदाचार ग्रहण करते हुए शुद्ध भाव से श्रीकृष्ण

भजन में नियोजित होकर अपने जीवन को धन्य किया है।

श्रीलगुरुदेव